(30)

ਮਜ਼ਹਰ ਦਾਸ ਦੇ ਕਬਿਤਾਂ ...

ਫ਼ੈਜ਼ਫੁਰ - ਬਾਣੀ

[ਗੁਲਾਬ ਪਰਕਾਸ਼ ਦੇ, ਫ਼ੈਂਕਰ ਰਾਗ,
[illegible]
[illegible]
ਰਾਗ, [illegible], [illegible]
[illegible] ।]

8H1
G536

1360-MS.

37

37

32

1360

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

1360-145 दीपोत्सव के कूट

रागसारंग। बड़ेनि कों आगें देत दे
धर श्री गोवर्द्धन पूजन आवत। मानसी
गंगा न्हायें नरव सिरव पाछें ह्य धौरी
कों नांवत। बहुरि परवारि आर गजा खर
चित धूप दीप बहुत जगनरावत। देवी
रा आरती करत है ब्रज भामिनि मिलि
मंगल गावति। टेरि ग्वाल भाजन भरि
दे करि पीठ थापि सिर पेच बनावत। च
तुर्भुज प्रभु गिरिधर ब्रज यह बिधि कु
वर राज करौ मन भावत॥२ गोवर्द्धन
पूजौ गोकुलराय। बलसमेत सब सखा
बुले मिलि चरि के खेला वें गाय। ले ले
नांउ टेरि सब सुरभी नियरी ले ले बुलाय
देत की कें बछरा गज हि मोहन पातो बरदि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ाय। मेलि उठु बुलाइ धूमरि सन्मुख
आइ धाय। चतुर सुजान प्रभु गिरिधर
नेनि वारते इमि करताल बजाय॥
॥२॥ खेली होब खेली गांग बुलाइ
धूमरि धौरी॥ ब[illegible]री पर उपरेना फेरत
उठ मेलि के दोरी॥ आप गोपाल की
कमारत है गो सुत कों चरि कोरी॥ छं
र करत लेकुटि करि लीनें मुख सों नारि
पिछोरी॥ आनंद मुदित ग्वाल सब बो
लत टेरि करत एक मोरी॥ चतुर सुज
प्रभु गिरिधर इमि सुख उपार कुंज
राउ कतोरी॥ ३ खेलन कों धौरी आ
ऊंली नी। उठ मेलि आतुर सन्मुख
के स्याम सुंदर कीनी मृदु बानी॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बउडे गोवथकित भये आठेल अबलों दे
खीनकहानी॥ नांवतगायमई नौतन
ब्रजबरसोबरसकुसराइइजानी।नंद
कुमारनिवारिजारिमुखजेजेसबद
कहतकलबानी।चतुरभुजप्रभुगि
रिधरनलालकीसदारहोसीरजधानी
॥५॥ गोवरधनपूजाकरिगोविंदसब
ग्वालनपहिरावत। आनसुबाउसुब
लश्रीदामाऊवें लेलेनामबुलावत।
आपनेहाथतिलककरिचंदन आरु
अंगनुलपटावत।बसनविचित्रस
बनकेंमाथेंबिधबाधिबनावत।माऊ
नमसिमुनरीकुंडवारोताइीताहिपग
रसो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वत। चतुर्भुज प्रभु गिरिधर फिरया छें धो
रीथे नु रखि लावत॥ ५॥ गोवरधन पूजि
सबे रस भीने। सइस भुजा गिरिधर न
हस रोऊं वत स्याम सखा संग लीने।
सुनिकें ऊमगे विरध बालक सब त्री
ग न्नित सा कथा कयृत कीनें। ज्ञो कोई
रहीसको किनु जन न को बांइ पसारि
बोलदे लीने। ऊ ऊंकार होत चहुं दिस
तें भामिनि मिलि गावति सुर झीने॥ च
तुर भुज प्रभु गिरिधर नंद दास अर राज
करो जिनिकेनि सुख दीने॥ ६ राग सारंग
गोवरधन पूजन चले गोपाल॥ मत्र
गयंद देखि विजिय लाजत निरखि मंद

गतिचालि। ब्रजनारिनपकवानबहुभा
केतिनरिनरिनीसेथाल। अंगसुदेस
विविधपटभूषनगावतिगीतरसाल
बाजेअनेकबेनुरवसंमितचलतविवि
विधिसुरताल। धजापताकाछत्रचम
र धरें करत कुलाहलग्वाल। बालक
वृंदचहोंदिससोचितमनऊकमलअ
लिमाल। अंनदासप्रभुत्रिभुवन
मोहनगोवरधनधरलाल॥७॥ मद
नगोपालगोवर्द्धनपूजत। बाजततता
लमृदंगसंखधुनिमधुरमधुरमुरली
कपेझूजतो। कुमकुमतिलककललोट
दियेनवबसनसाजिआईगोपधनी।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

३ ग्वाल

श्रीसपासुंदरीकेनकेतनमंध्यगो
विंदमानोमरकतमनी॥ श्रानंदम
गनंसबदेरतइइथोरीथेनुबुलाव
ते। छिरकतइरदद्धदधिश्रोछित
देतश्रेसीससकललागतपग॥ कुं
तनहासगोवरधनधरगोकुलकेर
ऊपियराऊश्रविलयुग॥ १८

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रागधनासरी ॥ मह्लाबलकी नोह्लो
ब्रजनाथ। इत मुरली इत गोपिन सोंर
ति इत गोवर्द्धन हाथ। इत सब बछ्
चरत अपने रंग ग्वाल बजावत पात।
इत बालक पेपान करत हैं इत सुरभी
तिन खात। कोपे मेघ महाप्रलय के
झरलायो दिन सात॥ परमानंद रा
खि लियो मोहन ने मेटि इन्द्र की घात॥ १॥
अब न छाडों चरनकमल महिमा मैं
जानी॥ सुरपति तुम नाउ धरयो सो
काभिमानी॥ अब ही लों जानत हो
ठाकुर है कोई। अपनो ब्रज राखि
लियो मेरी पति खोई॥ ए रापति का

मधेनु गंगाजल आन्यो। हरि कों
अभिषेक देत जेजे सुर बान्यो। बा
र२ प्रनाम करत गोवर्द्धनधारी॥
परमानंद प्रभु गोप[illegible] भेष लीला
आतोरी॥१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

राग बिलावल। गोकुलको कुलदेवता प्यारो गिरिधरलाल॥ कमलनैनसांवरोबडूबाहु बिसाल। वेगि करोमेरो कह्यो पकवानरसाल। बलमइयावाबल लेत हे करिकरि गततनाल। इनके दीने बाढि है गैयाब छबाल॥ संगमिलि भोजन करत है जैसे पशुपाल गिरिगोवर्द्धन पूजिये जीवनिगोपाल। सूरदास उरपतर है। लातें यमकाल॥१॥ इमेंसरनतुमारेंरारवोडूजी ३॥ गोपीग्वालपुकारत हरियें डुरिडुरि बाढलगरजत पीउ॥ इंद्रकोप कीयो इमऊपर मेघसमूहपठाये॥ मूसलधार घनबरखनलागे रिपुसमान हे धाये॥

झनिठुरयो झें नाथ तुम्हारो इंसिर कड़
तमुरारी॥ अनायास छोनों लेऊं प
रबतेकर धरि लियो उपारी॥ सात दि
वस अपनो सो कीनो मघ वाग यो खि
साय॥ परमानंद स्वामी के गोपा बसे
निसान बजाय॥ १॥ यातें झिवल्ला
वे सदा गोवर्द्धन धारी॥ इंद्र को पतें गो
पकी आपदा निवारी॥ जो देवता
आराधीये सो हरि के भिखारी॥ मां
जि लेई कत सेवये बिगरें उपकारी॥
दुःसासन के कोपतें द्रूपदी उबारी॥
परमानंद प्रभु सांवरो जगत निदि
तकारी॥ १॥ चिरझियो लाल गोवर्द्धन
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बार बार समुझावन लागे अमृत बरख
त बानी॥ सुनु ऊधौं उपदेस हमारो वा
रिपदार्थ दानी॥ करहु बेगि पकवा
न बहुत करि दूध दह्यौ घृत सानी॥ गो
वर्द्धन [illegible] आयो। राखो ना
[illegible] की पूजा कीजे गोधन को सुख
दानी॥ यह परतीति नंद के आई का
न्ह कही सो मानी॥ परमानंद प्रभु
मान भंग करि ऊठे कीने पानी॥१॥

नंद गोवर्द्धन पूजो आजु। जाते गाय
ग्वाल गोपिका सब सुखनि को राजु॥
जाको मुरपति [illegible] बिबल हि बनाव
त कहा सके को काजु॥ गिरिके ब
ल बैठे घर आपने कोटि रहे परगाजु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative.

। मेरो कह्यो मानि अबकोऊ नहिं रम
कट नु साऊ ॥ परमानंद आनंद केदी
ने वृथा करत कत नाऊ ॥ १ ॥ गोव
र्द्धन पूजि इंद्र मन आय ॥ राखो नागु
नंद मघवा को करि इकड़ो रिसाय ॥
आनंद मन सब ग्वाल चले रस गो
रस माट बनाय । सखा नि सहित ब
ल राम कन्हैया फिरत सिंगार तगा
य ॥ आपुन समली यो गिरि मूर
ति अंतर प्रीति उपाय ॥ परमानंद
प्रभु लेद धि ओदन बेठ रहे सब
खाय ॥ १ ॥ नीकी झोरवेली गुपाल
की गैया । कूके देत ग्वाल सब ठाढे
यहे दिवारी नीकी झोरैया ॥ नंदादि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रामकलीरागे एकतालीताले ॥
चंदनचर्चितनीलकलेवरपी
तवसनवनमाली केलिचलन्म
णिकुंडलमंडितगंडयुगस्मि
तशाली ॥१॥ हरिरिह मुग्धवधू
निकरे विलासिनि विलसति केलि
परे ॥ध्रु॥ पीनपयोधरभारभरे
ण हरिं परिरभ्य सरागं। गोपव
धूरनुगायति काचिदुदंचितपंचम
रागं ॥२॥ कापि विलासविलोल
विलोचनखेलनजनितमनोजं।
ध्यायति मुग्धवधूरधिकं मधु
सूदनवदनसरोजं ॥३॥ कापि क
पोलतले मिलिता लपितुं किमपि
श्रुतिमूले। चारु चुचुंबनितंब

वतीदयितं पुलकैरनुकूलै ॥३॥
केलिकलाकुतुकेन च काचिद
मुयमुनाजलकूले ॥ मंजुलवंजु
लकुंजगतं विचकर्षकरेण दुकूले
॥४॥ करतलतालतरलवलया
वलिकलितकलस्वनवंशे । रास
रसे सहनृत्यपरा हरिणा युवति
प्रशशंसे ॥५॥ श्लिष्यति कामपि
चुंबति कामपि कामपि रमयति रम
यति रामां । पश्यति सस्मित
चारुतरामपरामनुगच्छति वा
मां ॥६॥ श्रीजयदेवकवेरिदम
द्भुतकेशवकेलिरहस्यं । वृंदा
वनविपिने ललितं वितनोतु
शुभानि यशस्यं ॥८॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ॐ रागकाफी। मोहनखेलतरंगरह्योहो॥
प्यारोसुंदरचतुरसुजान।धु०।इततेंश्री
हरिसकलसखासंगआयेजमुनातीर।
उततेंश्रीराधाजूआयेनवजुवतिनिकी
भीर।तननतनसुखकीसारीपहरेंलोल
कंचुकीगात।चोवाफुलेलअरगजा
जमजमपिचकाईसबहाथ।सन्मुख
यूथपरस्परछिरकतआनंदउरनसमा
त।उडतगुलालअबीरदहोंदिसदि
थतनयोसबसाथ।स्यामसलोनोंअ
तिरसलंपटहसिपियालीनीभरिबाथ।
मनभायोकरिछांडिदइमोहनलाडिले
सुघरप्रबीन।जुगलरूपपरयुगरब
लिरगोबिंदतनमनकीन॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रागकल्याण। नवले ऊ त्रौरब्रजराय के खेल तरसभरे होरीहो। गौरस्याम तन राऊंहीब लेमोहनकी जोरीहो। ऊवे चढि ऊबटे रियोसु बले श्रीस्यामा नाई हो प्यवन सुनतेब ले धाई योबोले ऊ और कङ्कार ईहो। मंदिरतें सब स ऊबले आयजुरे सिंघपोरीहो। मोहनमुर लीबजाइयोसुनत ब्रजबधूदोरीहो। ब्रज ऊते सबएकतेभयेएक और ब्रजनारीहो। गावतिगीत सुहावनें हसिर देतिबगारी हो। चऊदिसते बाजे बजे रंजमुरजउफ तीलोहो। डिमडिमीकुंकुमीफलेरी किबर बेनुरसालेहो। औरगजानरिर पिचकोई औचेरबीचहराया हो। मनमोहनकोछि रकडीबदनमोरिमुसकाईहो। कोपिसखा सन्मुखभयेकेसरऊमऊमघोरीहो॥घे रिसकेसब ब्रजसुंदरिएकरगहिबोरीहो॥ धवतियूथमहिराधिकाउतब्रजराऊकिसो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

राहो। युगससि कूप किरन पावे जोवनवा
व हँकोराहो। सबसरवियनि मिलि मतो म
त्यो मोहन कोंप कराई हो। छलबलतोन
हि पाईये कैं हि मिसि पकरे आई हो॥ स
लितो आगे ले दोरी यो मोहन लाने घेराहो।
पियप्यारी बगांठि जोरीयो हुसत बदन
तनईरीहो। गालैंतु समारते सुतु कुसरवा
बलभाई हो। जोयकहो ब्रज राजसों मोहन
ले कुछिडाईहो। इहि बिधि होरी खेलें हों
देत सकल आनंदाहो। गोबिंद बलि है
जाई जै गोकुल के चंदाहो। श्रीगोवर
धनराय तुम्हारे चंचल नैन बिसाल। छुमा
रे उर सोहे बनमाला। ध्रु०। खेलत रत हो
पये ऊहां पनहारिन की बाट। गागरि
फोरे सीसतें कोऊ चरन न पावे घाट। अर
गजकुमकुम घोरिकें प्यारी लीनो कर लप
टाय। अबकें र आयकें भोगी गिरिधर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वसंतसमयरागकल्यान

ग्वालिसगाय। नंदरायकेलाडिलेबलितसो खेलितिवार। मनमेंआनंदभरिरह्योमुख देखतिसबेब्रजनारि। इहिविधिहोरीखेलि हेंब्रजबासिनसंगआय। गोवरधनधर रूपपरजनगोविंदबलिजाय॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२०

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२ राग देवगंधार फूले नंद किसोर किसोरी। उत ब्र
जभूषन कुअर रसिक मनि रत वृषभान नंदनी
गोरी। पीतांबर नील पट कर कत उपमा गगन
दामिनि छबि थोरी। देखि फूलत ब्रजबनि
ता देत झुलाय गहें कर डोरी। मुदित नयेमि
ले सुर गावत किलकर देउ रजअ कोरी॥
परमानंद प्रभु मिलि सुख बिलसत रंइब
धूसिर धुनति कुकोरी। डोले देखि ब्रज
बासी फूले। गोपी झुलावति गोबिंद झू
ले। कमल नैन को लाड लडावे। प्रमुदि
त गातमनोहर गावे। आनंदकंद बृंदा
बनमोहे। मुरली मनोहर मन्मथ मोहे॥
रसिक सिरोमनि आनंद सागर। रा
मदास प्रभु गिरिधर नागर। राग गोडी।
मदन गोपाल झूलत डोल। बाम भोगरा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

धिकाबिराजितपहिरेंनीलनिचोल॥ गोरी
राग अलापति गावति कहति भावते बोल।
नंदनंदनकों नेसोमनभावति जासोंप्रीति
नथोरि। नीकोंनेषबत्योमननमोहनआ
ऊलईडुमनोल। बलिहारीमननमोहन
मूरतिऊगदेकेमेबओल। अद्भुतरंग
परस्परबाढ्योआनंदहूदेकलोल। पर
मानंददासतिंहिओसरऊउतहीरकाजोज।
रूलतडोलेहरिरिवर गावत। निरखि
रछबिपरस्परनवलसुंदरदोऊसचुपावत।
रसिकेसखिबिहारीप्यारीसरसनदुलमधु
रतानीनिरीहरिगावत। माधोप्रभुगिरि
वरधरनागर नागरि आनपियामिलि
गावत॥२॥ रागकल्याण। डोलहू
लतगिरिधरलाल। ब्रजपुरबनितानिर
खिवारतिहेकेंठनकीमनिमाल। सकल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सिंगार अनूप बिराजित कुंजबिहारी सुरंग खग्गामा
धो दास निरखि गोपीजन प्रमुदित श्री गोपा
ले। रागजैतश्री। सोना सक्कुल सिरोमनि
झोदंपति झूले डोल। मोहन राम झूलें हीं। धु॰।
कनक खंभ मरकत मनी हीरा खचित
अमोल। चौकी पना पिपारो झार चीर
तन की पांति। मुगता माल समुहो बनि झो
कहा बरनों बहु भांति। झूलें दूलह गिराधि
का हूलें नंदकुमार। रति रस केलि बिरा
जहीं बाढ्यो रंग अपार। [illegible]
[illegible] तापर खाबड
आवहीं झुक मकरसइ ताय। बीन बेंन
रबी बकिन्नेरी कालाय। सखा मंडली सो
भिता गावत फागुध मारि। रतसो चित
बहु सुंदरी बोलति मीठी गारि। झ
कझोरे पियकी वे लेकहा बरनो इहे बानि
४ मधु मुरली

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

३। चोवा वंदन छिरकें डारि गोपीगोप अग्‍न। ऊखिकर्दम मही मंडिता ऊड़त गुलाल अबीर। करत बिनोद कतूहला राज़ित अतिसो भीर। खेलत बछवबछा वाअति छिनुनव अनुराग। कवल खेडके आवत मधुपगन भोऊत पीत पराग। सिथल बसन कटि मेखलारडी अलक लटि छूटि। एकएका मिल धावडी गई मोतिन लर टूटि। चिरजीव कुसुदर बर प्यारो सकलघोषसिरताजि। नंद जसोदा के सुऊत फल प्रगट भये हैं आज। सुरकुसुम निबरिखा करे लीलादेखत आय। आस करन प्रभु गिरिधर को जसुरघोसकल जगछाय॥

१२

न्ह्यो। इनेधरा बसु परम तपोधन पुत्र नाम निवड़िकरी॥ तेतु भए नंदजसोदा दोऊ बरमांग्यो सुतदेऊहरी॥ कहिनंदेग्वालनिके आगे सकल मनोरथ पूरनकरे। परमानंददास कोठाकुर गोकुलकी आपदाहरे॥ १॥ धनियह कूख जननमंउहां लीनो गिरिगोवर्द्धनधारी। लरिकाकहा बऊो सुखपायेजो नहोयउपकारी॥ एकसो नारखबरा बरसानीये करेउ कुलरखवारी॥ अति आनंद कहतिगोपीजन मनक्रमबचनबिचारी॥ इंद्रकोपकीनो ब्रजऊपर मघवावृष्टिनिवारी॥ परमानंददासको ठाकुर सुउबलग

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रैबत्रहारी॥१॥

1360 MS.

३२

१६१६

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharati Initiative